9

कैसे डटे रहें

(अध्याय 12)

पिछले महीनों और सालों में मुड़ कर देखने पर हमें अपने उन खोए हुए प्रियजनों का ध्यान आ सकता है। परिवार के किसी सदस्य को खोना एक दुखद अनुभव है। परन्तु हमें यह देखकर भी शोकित होना चाहिए कि मसीह में हमारे कुछ भाई और बहनें अब हमारे साथ नहीं हैं। एक समय था जब कलीसिया में विश्वासी सदस्य, स्वर्ग में मार्ग पर थे; परन्तु अब वे विश्वासी नहीं हैं। वे भटक गए हैं और अनन्त विनाश के अपने मार्ग पर हैं। परमेश्वर के परिवार के आत्मिक विश्वास से फिरने और हमारे शारीरिक परिवारों में होने वाली मृत्यु से भी अधिक है।

परन्तु हमें आगे को देखने की आवश्यकता है। आने वाले महीनों में क्या होगा। क्या हम में से कुछ लोग हमारे आत्मिक परिवार के कुछ लोगों की तरह ही भटक जाएंगे?

मसीही लोगों के साथ जिनके नाम इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई यही सवाल था। वे भटक जाने के खतरे में थे। वे शत्रु के हमले के सामने डगमगाने वाली सेना की तरह थे। इब्रानियों की पुस्तक ने उन्हें डटे रहने अर्थात भटक जाने से बचने में सहायता के लिए लिखी गई थी।

विश्वास से फिरने के लिए बचने के लिए क्या किया जा सकता है। वे एक-दूसरे को प्रोत्साहित करना आरम्भ कर सकते थे (देखें इब्रानियों 3:12, 13; 10:24, 25)। परन्तु अन्त में यह देखने की कि वह स्वयं विश्वासी है या नहीं, जिम्मेदारी हर मसीही की अपनी है। यह कैसे हो सकता है? इब्रानियों 12 अध्याय इस प्रश्न पर बात करता है और बताता है कि मसीही लोगों के रूप में हम *कैसे डटे रहें*।

धीरज रखें

पहले तो डटे रहने या थामे रखने के लिए धीरज होना आवश्यक है। (पढ़ें इब्रानियों 12:1, 2क।) इब्रानियों 11 में हम विश्वास के कुछ बड़े नायकों के बारे में पढ़ते हैं। ये ''गवाहों का बादल'' हैं जिनका उल्लेख 12:1 में किया गया है। वे गवाह कैसे हैं? उन्होंने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद सफ़लतापूर्वक दौड़ दौड़ी है और वे इस तथ्य के गवाह हैं कि यह दौड़ पूरी की जा सकती है। हम उनके अनुभव से जानते हैं कि ऐसा हो सकता है, हमें केवल दौड़ना है!

हम उनके नमूनों का अनुकरण कैसे कर सकते हैं? अपने जीवनों में से पाप को निकालकर और दौड़ते रहकर। हम सफलता से कैसे दौड़ सकते हैं? ''धीरज'' (KJV) या ''सहनशीलता'' (NASB) या ''दृढ़ प्रयत्न'' (RSV) से दौड़कर। मसीही जीवन एक दौड़ की तरह है, पर यह 100 मीटर की तेज़ दौड़ की तरह नहीं है। इसके विपरीत यह मैराथन जैसी अधिक है। जितने के लिए क्या आवश्यक है? आपको केवल दौड़ते रहना और कोशिश करते रहना आवश्यक है।

मसीही जीवन का रहस्य क्या है ? बहुत योग्यता ? गहरी ''आत्मिकता'' ? नहीं ! इसका एक आगे बढ़ते रहने की योग्यता, प्रतिदिन वह करने की पूरी कोशिश जो प्रभु आपसे चाहता है। मसीही बनने के लिए इसी की आवश्यकता है: दृढ़ प्रयन्त करने की योग्यता चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों।

यीशु को ताकते रहें

दूसरा, डटे रहने के लिए हमें यीशु को ताकते रहना आवश्यक है। इब्रानियों 12:2ख-4 का संदेश विशेषकर उन लोगों के लिए है जो अपने विश्वास के कारण सताए गए हैं या सताए जाएंगे। हमारे मन अपने आप ही यीशु की ओर लग जाते हैं जो उसका सताया गया था उदाहरण है। क्योंकि वह अपने पिता का वफ़ादार रहा। उसने ''लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुख सहा'' पर फिर भी पाप नहीं किया। अपने दुख उठान के द्वारा उसने दूसरों को लिए उद्धार को और परमेश्वर से आदर को जीत लिया।

यीशु के नमूने पर ध्यान करने का महत्व। पाठकों पर पहले सताव हुआ था (इब्रानियों 10:32-34)। नये नियम के अन्य मसीही लोगों की तरह शायद उनके भी ''विद्रोह में लोग बातें करते'' थे (प्रेरितों 28:22)। उन्हें चाहे विश्वास की खातिर अभी अपना लहू नहीं बहाना पड़ा था पर सम्भव था कि सताव के जारी रहने से उनमें से कुछ शहीद हो सकते थे। यदि वे यीशु पर ध्यान करते तो अनन्तकाल में मसीह की महिमा में भागीदार होने की आशा के द्वारा ''आक्रमण होने पर'' भी विश्वासी बने रहने के अपने निश्चय को पक्का कर सकते थे।

विश्वासी बने रहने की चुनौती का सामना करते हुए हमें भी ''[यीशु] पर ध्यान'' करना आवश्यक है। समस्या, सताव या परीक्षा जो भी हो यह उससे बुरी नहीं हो सकती जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने और मनुष्य जाति को बचाने के लिए यीशु को सहनी पड़ी थी। यीशु को ध्यान में रखें और डटे रह सकते हैं।

याद रखें कि परमेश्वर को अपने बच्चों को अनुशासित करता है

डटे रखने के लिए विपरीत परिस्थितियों को अपने बच्चों को अनुशासित करने के लिए परमेश्वर के ढंग के रूप में देखें। (पढ़ें इब्रानियों 12:5-11.) इब्रानियों की पुस्तक के आरम्भिक पाठकों को सताव सहित कठिन समयों का सामना करना पड़ा था। इस वचन में समझाने वाली बात यह है कि वे इन अनुभवों को उन्हें परमेश्वर के अनुशासन के रूप में देख सकते हैं। उन्हें इस अनुशासन का स्वागत करने के लिए चार कारण बताए गए:

(1) अनुशासन परमेश्वर के प्रेम की पहचान है, क्योंकि ''प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है'' (12:6)।

(2) अनुशासन पुत्र होने का प्रतीक है; जो ताड़ना को नहीं मानता वह परमेश्वर की सन्तान नहीं है (12:7, 8)।

(3) केवल यही तर्कसंगत था कि वे परमेश्वर के अनुशासन को मान लें, क्योंकि उन्होंने अपने सांसारिक पिताओं से मिलने वाली ताड़ना को मानता था और इससे भी अधिक आश्वस्त हो सकते थे कि परमेश्वर उनके लिए उससे भी अच्छा करेगा (12:9, 10)।

(4) अनुशासन लोगों के लिए अच्छा है। परमेश्वर इसे अपने बच्चों पर भेजता है ताकि वे ''उसकी पवित्रता के भागी'' हो सकें (12:10)। कई बार यह ''चैन के साथ धर्म का प्रतिफल'' देता है (12:11)।

हमारे ऊपर हमारी किसी गलती के न होने के बावजूद बुराई के आने पर भी हम मान सकते हैं कि परमेश्वर हमारे ऊपर ये बातें होने देता हैं क्योंकि किसी न किसी प्रकार वे हमें बेहतर ही बनाती हैं। वास्तव में दुख और शोक और सताव हमें अपने लिए परमेश्वर की इच्छा को और ग्रहण करने वाले बनने के लिए या दूसरों की समस्याओं पर और खुले मन से स्वीकार करने वाले बनाने में सहायक हो सकता है। यदि हम अपने संघर्षों को परमेश्वर के हमें अनुशासित करने के ढंग अर्थात हमें परिपक्व होने में सहायता करने के रूप में देखें तो हम समस्याओं के आने पर अपने विश्वास में अधिक मज़बूती से टिक सकते हैं।

अपने इरादे को मज़बूत कर लें

चौथा, डटे रखने के लिए हमें अपने इरादे को मज़बूत करना आवश्यक है। (पढ़ें इब्रानियों 12:12-17.) मुझे विशेषकर 12:12 पसन्द है क्योंकि यह बड़े अच्छे ढंग से यह कई बार ये आत्मिक रूप में कैसा लगता है। मैं वास्तव में संदेह नहीं करता और न ही विशेषकर परेशान या चिन्तित होता हूं। मुझे विद्रोही, क्रोधित या मृत जैसा अहसास नहीं होता; मुझे केवल पिछली भावना बनने जैसा लगता है। यह ऐसा है जैसे मेरे, ''ढीले हाथ'' और ''निर्बल घुटने'' हों अर्थात जैसे आत्मिक रूप में कहें तो मैं सुस्त या बीमार सा लगता हूं। क्या आपको कभी ऐसा लगा है?

हम इसका क्या कर सकते हैं? इब्रानियों 12:12 कहता है, ''ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो।'' अन्य शब्दों में मसीही बनने के लिए ''अपने इरादे को मज़बूत करो'' है। दिलेर बनो! शायद हमें ऐसा ही कोई निश्चय करने की आवश्यकता है: ''अब से मैं मज़बूत बनूंगा; आगे से मैं पूरी तरह से प्रभु के लिए समर्पित जीवन जीने का प्रण लेता हूं!''

यह भाग आगे स्पष्ट वाक्य पर आता है कि यदि हम नया इरादा करते हैं तो क्या होगा। (1) हमें अपने लोगों के साथ शान्ति से रहने की कोशिश करनी चाहिए। (2) हमें पवित्रता के लिए अर्थात और पवित्र बनने के लिए प्रयास करने आवश्यक हैं। (3) हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि न तो कोई व्यक्ति और न कोई वस्तु अर्थात ''कोई कड़वी वस्तु'' हमारी विरासत को हम से छीन न पाए। (4) हमें अनैतिकता से बचना है। (5) हमें एसाव की तरह धन के लाभों के लिए अनन्त आशिषों का सौदा करने से बचना है। यीशु मसीह के वफ़ादार बने रहने के लिए सबसे बढ़कर जिस चीज़ की हमें आवश्यकता है वह विश्वासी बने रहने का इरादा है!

आपको हैरानी होगी कि जीवन में सफ़ल होने वाले लोग आवश्यक नहीं कि सबसे समझदार या योग्य हों? कॉलेज के शिक्षक के रूप में मैं देखता रहता था कि टैस्ट में सबसे अधिक अंक लेने वाले छात्र आवश्यक नहीं कि प्रथम ही आएं। वास्तव में कई बार अपने कोर्सों में फेल हो जाते हैं। इसके लिए प्रथम आने वाले छात्र आम तौर पर औसत छात्र होते थे जो अपना काम लगन से करते रहते थे। उन्होंने स्कूल में सफ़ल होने का इरादा किया होता था और वे सफ़ल भी होते थे! आत्मिक मामलों में सफ़ल होने के लिए हमें ऐसे निश्चय अर्थात परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के मज़बूत इरादे की आवश्यकता है!

अपनी बड़ी आशिषों को याद रखें

अपने विश्वास को डटे रखने के लिए हमें अपनी बड़ी आशिषों को याद रखना चाहिए। इब्रानियों 12:18-29 पुरानी और नई वाचा के बड़े अन्तर को दिखाता है। उसकी जिसे ''छुआ जा सकता है ... धधकती आग ... अन्धकार और चमक'' आदि की बात करते हुए लेखक सीनै पहाड़ पर मूसा की व्यवस्था के दिए जाने की बात कर रहा था। (देखें निर्गमन 19; 20; व्यवस्थाविवरण 4; 5.) वह कह रहा था, ''तुम [ऐसे पहाड़] के पास नहीं आए थे।'' आज हम उसकी वाचा में नहीं हैं और उस व्यवस्था के अधीन नहीं हैं।

तो हम किसके पास आए हैं? इस पर विचार करते हैं: हम ''सिय्योन के पहाड़ के पास ... जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम के पास, ... लाखों स्वर्गदूतों और उन पहलौठों की साधारण सभा ... कलीसिया जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हुए थे, सबसे न्यायी परमेश्वर के पास, और ... सिद्ध किए हुए धर्मियों की आत्माओं ... नई वाचा के मध्यस्थ यीशु ... के उस लहू के पास आए'' हैं!

पुरानी वाचा में जिसे हिलाया जा सकता है और इस कारण हटा दिया जाएगा और नई वाचा जिसमें ''एक ऐसा राज्य है जिसे हिलाया नहीं जा सकता'' स्पष्ट अन्तर किया गया है। इस अन्तर की तीन बातों ने विशेषकर पाठकों प्रभावित किया होगा।

(1) *वे उन से कितने अच्छे थे जो व्यवस्था के अधीन थे।* वह प्रबन्ध एक अवसर के द्वारा दिखाया गया था जब लोग उसके निकट ही नहीं आते थे जहां परमेश्वर था। उसके विपरीत नये प्रबन्ध में जिसमें पाठक रह रहे थे हमें परमेश्वर तक और स्वर्ग की सब सेनाओं तक पहुंच दी गई!

(2) *उन्हें कितनी आशिषें मिलीं थीं।* वे संसार में थे पर उसके साथ ही एक और संसार अर्थात परमेश्वर के निवास वाले भाग में थे। वे आज रह रहे मसीही लोगों, सारे जा चुके धर्मियों, उन्हें बचाने वाले लहू, उस प्रभु के जिसने उन्हें भेजा था, परमेश्वर जो उनका न्याय करता है और सब दूतों के साथ देने के द्वारा! हमे इसका भाग बनने के लिए स्वर्ग में जाने की राह देखने की आवश्यकता नहीं है।

(3) *पुरानी वाचा कितनी परिवर्तनशील थी और नई वाचा कितनी स्थाई!* 10:9 में हम पढ़ते हैं, ''... वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे।'' यीशु सदा तक रहेगा और उसकी याजकाई पक्की हो चुकी है (7:24)। इब्रानियों की पूरी पुस्तक में, ''पुराना,'' ''पहला,'' ''नया,'' और ''उत्तम'' शब्दों के इस्तेमाल में व्यवस्था के बदल जाने का सुझाव देते हैं।

यह देखते हुए पाठकों ने निश्चय ही मन बनाया होगा कि ऐसी बड़ी आशिषों के आने वाले होने के कारण उन्हें हर दिन यीशु के लिए जीने की दोहरी मेहनत करना चाहिए। संदेश के किसी सूरत में समझ न आने पर लेखक ने एक और तरीके से समझाया कि बड़ी आशिषें बड़ी जिम्मेदारियां भी देती हैं। मसीही लोगों को बहुत बड़ी आशिषें मिली थी। इस कारण हम परमेश्वर की इच्छा को पूरी न कर पाने पर और भी बड़े दण्ड की उम्मीद कर सकते हैं: ''सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुंह न फेरो''; ''क्योंकि हमारा परमेश्वर भस करने वाली आग है'' (12:25, 29)। बड़ी आशिषों और अवसरों को पाने का परिणाम यह है कि हमें अपनी आशिषों

की अनदेखी करने पर बड़ा दण्ड भी मिलेगा! (2:1-3; 10:28, 29 भी देखें।)

अपनी कई आशिषों के विचार से हमें प्रभु की इच्छा को पूरी करने का और प्रयास करने की प्रेरणा मिलती है! उसके अलावा हमें याद रखना आवश्यक है कि उसकी आशिषों के लिए धन्यवाद लेने और अभार व्यक्त करने में नाकाम होने पर हमें भयंकर दण्ड मिलेगा!

सारांश

आने वाले महीनों और सालों में हमें गुमराह होने से कौन सी चीज़ बचा सकती है? हम कैसे डटे रह सकते हैं? इन बातों से सहायता मिलेगी: हम दृढ़ प्रयत्न करने, यीशु को ताकते रहने, यह याद रखने कि परमेश्वर अपने बच्चों को अनुशासित करता है, नये सिरे से ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करने का निश्चय करने और मसीही लोगों के रूप में अपनी आशिषों को याद रखने के गुण को हटा सकते हैं। अन्त में हमें याद रखना चाहिए कि निर्णय *हमें* ही लेना है कि हम विश्वासी रहेंगे या नहीं। हमारी वफ़ादारी कलीसिया, ऐल्डरों, डीकनों, प्रचारक, बाइबल स्कूल के टीचर या हमारे माता-पिता पर निर्भर नहीं है। यह हम में से प्रत्येक पर निर्भर है।

मसीही लोगों के रूप में सफल होने के लिए हमें वैसे ही इरादे की आवश्यकता है जैसा एक तथ्य पर डॉन मौरिस ने दिखाया। मेरे यह कहानी सुनते हुए कुछ विवाद हो गया कि अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज के कैम्पस में कुछ किया जा सकता है या नहीं। उस समय भाई मौरिस कॉलेज के प्रधान थे और वह उस विषय पर अपना निर्णय बताने के लिए चैपल में खड़े हो गए। अपना निर्णय बताने के बाद उन्होंने कुछ इस प्रकार कहा: "जब तक अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज के बोर्ड के ट्रस्टी, स्टाफ़ और छात्र सच्चाई का पक्ष लेते हैं, मैं उनके साथ हूं। यदि ऐसा समय आता है कि छात्रों को सही करने में कोई दिलचस्पी नहीं रहती, जब तक अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज के बोर्ड के ट्रस्टी और स्टाफ सच्चाई के लिए लड़ते हैं, मैं उनके साथ हूं। यदि कहीं यह हो जाता है कि कॉलेज के छात्र और स्टाफ़ सच्चाई में दिलचस्पी नहीं रखते, तो अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज के बोर्ड के ट्रस्टी सच्चाई का साथ देते हैं, तो मैं उनके साथ हूं। परन्तु यदि कभी अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज के बोर्ड के ट्रस्टी स्टाफ़ और छात्र सच्चाई का साथ नहीं देते, मैं उनके साथ नहीं हूं!"

क्या आपका भी ऐसा ही मानना है? क्या आप सच्चाई के लिए खड़े होने को तैयार हैं, चाहे आपको अकेले ही खड़ा होना पड़े? कलीसिया ऐसी सेना की तरह है जो शत्रु के खतरनाक हमले का सामना करती है। आपके आस पास के सब पुरुष और स्त्रियों डगमगा रहे हैं, भटक रहे हैं और शत्रु के सामने से भाग रहे हैं। क्या आप भी उन्हीं की तुलना करेंगे या आप अपने विश्वास में डटे रहेंगे?